जुमे का खुतबा

दिनांक: 15 रबीउल-अव्वल 1448 हिजरी, मुताबीक 28/8/2026 ई.

حِفْظُ النِّعَمِ

नेमतों की हिफ़ाज़त

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَن لَّا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ، وَصَفِيُّهُ مِنْ خَلْقِهِ وَخَلِيلُهُ، أَدَّى الأَمَانَةَ، وَبَلَّغَ الرِّسَالَةَ، وَجَاهَدَ فِي اللهِ حَقَّ جِهَادِهِ، حَتَّى أَتَاهُ اليَقِينُ، صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلَّمَ تَسْلِيماً كَثِيرًا؛ {يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ} [آل عمران: 102].

أَمَّا بَعْدُ: فَإِنَّ أَصْدَقَ الْحَدِيثِ كِتَابُ اللهِ، وَخَيْرَ الْهَدْيِ هَدْيُ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَشَرَّ الْأُمُورِ مُحْدَثَاتُهَا، وَكُلَّ مُحْدَثَةٍ بِدْعَةٌ، وَكُلَّ بِدْعَةٍ ضَلَالَةٌ، وَكُلَّ ضَلَالَةٍ فِي النَّارِ.

ऐ अल्लाह के बंदो! बेशक हम पर अल्लाह की नेमतें बहुत ज़्यादा हैं, और उसके एहसान इतने बेशुमार हैं कि उनका कोई हिसाब नहीं। उसने हमें कितनी ही भलाइयाँ दी हैं, कितने ही एहसानों से नवाज़ा है, कितनी ही मुसीबतों को हमसे टाला है, और कितनी ही आफ़तों और अज़ाबों को हमसे दूर रखा है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

{وَآتَاكُمْ مِنْ كُلِّ مَا سَأَلْتُمُوهُ وَإِنْ تَعُدُّوا نِعْمَتَ اللَّهِ لَا تُحْصُوهَا إِنَّ الْإِنْسَانَ لَظَلُومٌ كَفَّارٌ} [إبراهيم: 34]

"और उसने तुम्हें वह सब कुछ दिया जो तुमने उससे माँगा, और अगर तुम अल्लाह की नेमतें गिनना चाहो तो तुम उन्हें गिन नहीं सकते। बेशक इंसान बड़ा ज़ालिम (और) नाशुक्रा है।" (सूरह इब्राहीमः 34)

इंसान की यह बहुत बड़ी कमज़ोरी है कि नेमत जब तक हाथ से निकल न जाए, उसे उसकी क़द्र व क़ीमत का अंदाज़ा नहीं होता। ईमान और अमन नेमत है, सेहत और बाल-बच्चे नेमत हैं, पानी और बिजली नेमत है, बल्कि आपके सीने में चलने वाली हर साँस अल्लाह तआला की तरफ़ से एक नेमत है।

ऐ ईमान वालो! बेशक नेमतों की हिफ़ाज़त शरई अस्बाब के ज़रिए होती है जिनकी किताब व सुन्नत ने रहनुमाई की है। इन अस्बाब में से एक: गुनाहों से दूरी है, क्योंकि गुनाह नेमतों के छिन जाने के सबसे बड़े कारणों में से हैं। अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

{ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِعْمَةً أَنْعَمَهَا عَلَى قَوْمٍ حَتَّى يُغَيِّرُوا مَا بِأَنْفُسِهِمْ وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ } [الأنفال: 53]

"यह इसलिए है कि अल्लाह किसी ऐसी नेमत को जो उसने किसी क़ौम पर इनाम की हो, बदला नहीं करता जब तक कि वे खुद अपने नफ़्सों की हालत को न बदल दें, और बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है।" (सूरह अल्-अनफाल:53)

हज़रत जुबैर बिन नुफ़ैर रहिमहुल्लाह से रिवायत है, उन्होंने कहा: "जब क़ुबरुस फ़तह हुआ तो उसके रहने वालों को अलग-अलग कर दिया गया, वे एक दूसरे के बिछड़ने पर रोने लगे। मैंने हज़रत अबूद्दरदा रज़ियल्लाहु अन्हु को अकेले बैठे रोते हुए देखा तो मैंने कहा:

يَا أَبَا الدَّرْدَاءِ، مَا يُبْكِيكَ فِي يَوْمٍ أَعَزَّ اللَّهُ فِيهِ الْإِسْلَامَ وَأَهْلَهُ؟

ऐ अबूद्दरदा! आप इस दिन क्यों रो रहे हैं जिस दिन अल्लाह तआला ने इस्लाम और मुसलमानों को ग़लबा अता किया है? तो उन्होंने फ़रमाया:

وَيْحَكَ يَا جُبَيْرُ! مَا أَهْوَنَ الْخَلْقَ عَلَى اللَّهِ إِذَا هُمْ تَرَكُوا أَمْرَهُ، بَيْنَا هِيَ أُمَّةٌ قَاهِرَةٌ ظَاهِرَةٌ، لَهُمُ الْمُلْكُ، تَرَكُوا أَمْرَ اللَّهِ، فَصَارُوا إِلَى مَا تَرَى

तुझ पर अफ़सोस है ऐ जुबैर! अल्लाह के नज़दीक मख़्लूक़ कितनी बेक़द्र हो जाती है जब वह उसका हुक्म छोड़ देती है! कल यह एक ग़ालिब (विजेता) और फ़ातेह क़ौम थी, जिनके पास बादशाही थी, मगर उन्होंने अल्लाह का हुक्म छोड़ दिया तो इस हालत को पहुँच गए जो तुम देख रहे हो।"

हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया:

مَا نَزَلَ بَلَاءٌ إِلَّا بِذَنْبٍ، وَلَا رُفِعَ إِلَّا بِتَوْبَةٍ

"कोई मुसीबत नाज़िल नहीं होती मगर गुनाह की वजह से, और न ही कोई मुसीबत उठाई जाती है मगर तौबा के ज़रिए।"

और इमाम इब्न अल-क़य्यिम रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया:

وَمِنْ عُقُوبَاتِ الْمَعَاصِي زَوَالُ النِّعَمِ، وَحُلُولُ النِّقَمِ

"और गुनाहों की सज़ाओं में से नेमतों का छिन जाना और अज़ाबों का उतरना है।"

कितने ही ऐसे लोग हैं जो संपन्नता और खुशहाली में ज़िंदगी बसर कर रहे थे, लेकिन जब उन्होंने इताअत को नाफ़रमानी से और अमन को फ़साद से बदल दिया, तो उनके हालात बदल गए और उनकी नेमतें छीन ली गईं।

إِذَا كُنْتَ فِي نِعْمَةٍ فَارْعَهَا فَإِنَّ الذُّنُوبَ تُزِيلُ النِّعَمْ
وَحُطْهَا بِطَاعَةِ رَبِّ الْعِبَادِ فَرَبُّ الْعِبَادِ سَرِيعُ النِّقَمْ

"अगर तू किसी नेमत में है तो उसकी हिफ़ाज़त कर... क्योंकि गुनाह नेमतों को ख़त्म कर देते हैं। और बंदों के रब की इताअत के ज़रिए उसे महफ़ूज़ रख... क्योंकि रब्बुल इबाद सज़ा देने में बहुत तेज़ है।"

नेमतों की हिफ़ाज़त के अस्बाब में से एक: अल्लाह तआला का शुक्र अदा करना है, क्योंकि शुक्र ही नेमतों का मुहाफ़िज़ (रक्षक) और अज़ाबों को दूर करने वाला है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

{وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَأَزِيدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ} [إبراهيم: 7]

"और जब तुम्हारे रब ने ऐलान फ़रमा दिया कि अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं तुम्हें और ज़्यादा दूँगा, और अगर तुम नाशुक्री करोगे तो बेशक मेरा अज़ाब बहुत सख़्त है।" (सूरह अब्राहीम:7)

उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया:

قَيِّدُوا نِعَمَ اللَّهِ بِالشُّكْرِ

"अल्लाह की नेमतों को शुक्र के साथ क़ैद करो।" और बाज़ सलफ़ (बुज़ुर्ग) फ़रमाया करते थे:

الشُّكْرُ قَيْدُ الْمَوْجُودِ، وَصَيْدُ الْمَفْقُودِ

"शुक्र मौजूद नेमत की ज़ंजीर है, और खोई हुई नेमत का शिकार है।"

और शुक्र यह है कि दिल से नेमतों का एतराफ़ (स्वीकार) करें, ज़बान से तारीफ़ करें, और नेमत को रहमान की इताअत में इस्तेमाल करें। अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

{ اعْمَلُوا آلَ دَاوُودَ شُكْرًا } [سبأ: 13]

"ऐ आले दाऊद! शुक्र के तौर पर अमल करो।" (सूरह सबाः 13)

ऐ बा-बरकत लोगो! नेमतों की हिफ़ाज़त के अस्बाब में से एक सबब: नेमतों के इस्तेमाल में संतुलन इख़्तियार करना और फ़िज़ूलख़र्ची को छोड़ना है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

{يَابَنِي آدَمَ خُذُوا زِينَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا وَلَا تُسْرِفُوا إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ} [الأعراف: 31]

"ऐ आदम की औलाद! जब भी किसी मस्जिद में जाओ तो आरास्ता (सुसज्जित) होकर जाओ और खाओ, पियो लेकिन फ़िज़ूलख़र्ची न करो क्योंकि अल्लाह तआला फ़िज़ूलख़र्ची करने वालों को पसंद नहीं करता।" (सूरह अल्-आराफ़:31)

और अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया:

{ وَآتِ ذَا الْقُرْبَى حَقَّهُ وَالْمِسْكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيرًا (26) إِنَّ الْمُبَذِّرِينَ كَانُوا إِخْوَانَ الشَّيَاطِينِ وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِرَبِّهِ كَفُورًا } [الإسراء: 26، 27]

"और रिश्तेदार को उसका हक़ दो, और ग़रीब और मुसाफ़िर को उसका हक़ अदा करो, और फ़िज़ूलख़र्ची न करो। क्योंकि फ़िज़ूलख़र्ची करने वाले शैतानों के भाई हैं और शैतान अपने रब का नाशुक्रा है।" (सूरह अल्-इसराः 26, 27)

आज कितना ही पानी बर्बाद किया जाता है! कितनी ही लाइटें बिना ज़रूरत के जलाई जाती हैं! और कितने ही खाने कूड़ेदान में फेंके जाते हैं! अगर लोग यह एहसास कर लें कि यह नेमतें हैं जिनके बारे में उनसे पूछताछ की जाएगी, तो वे उनका इस्तेमाल बहुत अच्छे तरीक़े से करेंगे। अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

{ثُمَّ لَتُسْأَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ} [التكاثر: 8]

"फिर उस दिन तुमसे ज़रूर-ब-ज़रूर नेमतों के बारे में पूछा जाएगा।" (सूरह अत्तकासुरः8)

हज़रत अबू बर्ज़ा अस्लमी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

لَا تَزُولُ قَدَمَا عَبْدٍ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حَتَّى يُسْأَلَ عَنْ عُمُرِهِ فِيمَا أَفْنَاهُ، وَعَنْ عِلْمِهِ فِيمَ فَعَلَ، وَعَنْ مَالِهِ مِنْ أَيْنَ اكْتَسَبَهُ وَفِيمَ أَنْفَقَهُ، وَعَنْ جِسْمِهِ فِيمَ أَبْلَاهُ [رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَصَحَّحَهُ]

"क़यामत के दिन किसी व्यक्ति के क़दम उस वक़्त तक अपनी जगह से न हटेंगे, जब तक उसकी उम्र के बारे में न पूछ लिया जाए कि उसे किस चीज़ में बिताया, उसके इल्म के बारे में न पूछ लिया जाए कि उस पर क्या अमल किया, उसके माल के बारे में न पूछ लिया जाए कि उसे कहाँ से कमाया और कहाँ ख़र्च किया और उसके जिस्म के बारे में न पूछ लिया जाए कि उसे कहाँ खपाया।" [इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है और सही क़रार दिया है]।

नेमतों की हिफ़ाज़त के अस्बाब में से एक सबब: नेमतों के हुक़ूक़ अदा करना है। चुनांचे ज़कात और सदक़ात अदा करने से माल की नेमत हमेशा महफ़ूज़ रहती है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

{خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ إِنَّ صَلَاتَكَ سَكَنٌ لَهُمْ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ} [التوبة: 103]

" (ऐ नबी! ﷺ) आप उनके मालों में से सदक़ा (ज़कात) वसूल कीजिए और इस सदक़े के ज़रिए उनको (और उनके मालों को) पाक कीजिए और उनका तज़्किया कीजिए, फिर उनके लिए दुआ भी कीजिए। निःसंदेह आपकी दुआ उनके लिए शांति का कारण है और अल्लाह सब कुछ सुनने वाला और जानने वाला है।" (सूरह अत्-तौबाः 103)

और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

مَا نَقَصَ مَالٌ مِنْ صَدَقَةٍ [رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ، وَصَحَّحَهُ الْأَلْبَانِيُّ مِنْ حَدِيثِ أَبِي كَبْشَةَ الْأَنْمَارِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ]

"सदक़ा देने से माल कम नहीं होता।" [यह हदीस हज़रत अबू कबशा अनमारी रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है, जिसे इमाम तिर्मिज़ी ने रिवायत किया और अल्लामा अल्बानी ने इसे सही क़रार दिया है]।

और इल्म की नेमत उसको फैलाने और उस पर अमल करने से महफ़ूज़ रहती है। चुनांचे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल-आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

بَلِّغُوا عَنِّي وَلَوْ آيَةً... [رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ]

"मेरी तरफ़ से पहुँचाओ, चाहे एक ही आयत हो..." [इस हदीस को इमाम बुख़ारी रहिमहुल्लाह ने रिवायत किया है]।

और मर्तबे या रुतबे की नेमत लोगों की ज़रूरतें पूरी करने से महफ़ूज़ रहती है। हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

أَحَبُّ النَّاسِ إِلَى اللَّهِ أَنْفَعُهُمْ لِلنَّاسِ [رَوَاهُ الطَّبَرَانِيُّ، وَصَحَّحَهُ الْأَلْبَانِيُّ]

"अल्लाह के नज़दीक लोगों में सबसे ज़्यादा महबूब वह है जो लोगों के लिए सबसे ज़्यादा फायदामंद हो।" [इस हदीस को इमाम तबरानी ने रिवायत किया है और अल्लामा अल्बानी ने इसे सही क़रार दिया है]।

हर नेमत का कोई न कोई हक़ होता है, जो इंसान इस हक़ को अदा करता है, अल्लाह तआला उसके लिए उस नेमत की हिफ़ाज़त फ़रमाता है।

بَارَكَ اللهُ لِي وَلَكُمْ فِي الْقُرْآنِ الْعَظِيمِ، وَنَفَعَنِي وَإِيَّاكُمْ بِمَا فِيهِ مِنَ الآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ، أَقُولُ قَوْلِي هَذَا وَأَسْتَغْفِرُ اللهَ لِي وَلَكُمْ، فَاسْتَغْفِرُوهُ وَتُوبُوا إِلَيْهِ؛ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ.

दूसरा ख़ुत्बा

الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى إِحْسَانِهِ، وَالشُّكْرُ لَهُ عَلَى تَوْفِيقِهِ وَامْتِنَانِهِ، وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى الدَّاعِي إِلَى رِضْوَانِهِ، مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ، وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَمَنْ سَارَ عَلَى مِنْوَالِهِ إِلَى يَوْمِ الدِّينِ.
أَمَّا بَعْدُ: فَاتَّقُوا اللَّهَ -عِبَادَ اللَّهِ- حَقَّ التَّقْوَى، وَرَاقِبُوهُ فِي السِّرِّ وَالنَّجْوَى، وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ.

ऐ मुसलमानो! याद रखो कि अल्लाह की नेमतों की नाशुक्री से नेमतें छिन जाती हैं, और इंसान बदबख़्ती (दुर्भाग्य) का शिकार हो जाता है।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

{ وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ آمِنَةً مُطْمَئِنَّةً يَأْتِيهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِأَنْعُمِ اللَّهِ فَأَذَاقَهَا اللَّهُ لِبَاسَ الْجُوعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ} [النحل: 112]

"अल्लाह तआला एक बस्ती की मिसाल बयान करता है, जो अमन और चैन से रहती थी और हर तरफ़ से उसका रोज़ी उसे भरपूर पहुँच रही थी। फिर उसने अल्लाह की नेमतों की नाशुक्री की तो अल्लाह ने उनके करतूतों का मज़ा यह चखाया कि उन पर भूख और डर का अज़ाब थोप दिया।" (सूरह अन्नह्लः 112)

अल्लाह तआला ने दो सबसे बड़ी नेमतों यानी 'अमन' और 'रिज़्क़' को एक साथ बयान फ़रमाया, फिर यह स्पष्ट किया कि नेमतों की नाशुक्री ही इन दोनों के ख़त्म होने का कारण बनती है। जब क़ारून ने नेमत की निस्बत स्वयं की तरफ़ करते हुए कहा:

{قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَى عِلْمٍ عِنْدِي} [القصص: 78]

"यह तो मुझे मेरे अपने इल्म की बिना पर दिया गया है।" (सूरह अल्-क़ससः78) तो उसका अंजाम यह हुआ कि अल्लाह ने उसे और उसके घर को ज़मीन में धँसा दिया; ताकि वह हर उस आदमी के लिए सबक बन जाए जो नेमत देने वाले रब को भुलाकर नेमतों में मगन हो जाता है।

ऐ मुसलमानो! बेशक इन सबसे बड़े कामों में से, जिन पर हमें अपनी और अपने बच्चों की तरबियत करनी चाहिए, एक यह है कि: नेमतों की क़द्र और सम्मान की जाए और उन्हें बर्बाद होने और बेजा इस्तेमाल से महफ़ूज़ रखा जाए। चुनांचे खानों को कूड़ेदान में न फेंका जाए, पानी और बिजली में हरगिज़ फ़िज़ूलख़र्ची) न की जाए, और धन को उन कामों में बर्बाद न किया जाए जो अल्लाह की नाराज़गी का कारण बनते हैं। क्योंकि यह तमाम नेमतें वह अमानतें हैं जिनकी रखवाली अल्लाह ने हमारे ज़िम्मे लगाई है।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

إِنَّ اللَّهَ لَيَرْضَى عَنِ الْعَبْدِ أَنْ يَأْكُلَ الْأَكْلَةَ فَيَحْمَدَهُ عَلَيْهَا، أَوْ يَشْرَبَ الشَّرْبَةَ فَيَحْمَدَهُ عَلَيْهَا [رَوَاهُ مُسْلِمٌ]

"बेशक अल्लाह बंदे से इस बात पर राज़ी होता है कि वह एक निवाला खाए तो उस पर अल्लाह की तारीफ़ करे, या एक घूँट पिए तो उस पर अल्लाह की हम्द व सना बयान करे।" [इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है]।

इस लिए हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम शुक्रगुज़ारी और बेहतर उपयोग से अल्लाह की नेमतों की हिफ़ाज़त करें, क्योंकि इसी अमल से नेमतें हमेशा क़ायम रहती हैं और उनमें और ज़्यादा इज़ाफ़ा होता है।

اللَّهُمَّ حَبِّبْ إِلَيْنَا الإِيمَانَ وَزَيِّنْهُ فِي قُلُوبِنَا، وَكَرِّهْ إِلَيْنَا الْكُفْرَ وَالْفُسُوقَ وَالْعِصْيَانَ، وَاجْعَلْنَا مِنَ الرَّاشِدِينَ، اللَّهُمَّ أَعِزَّ الإِسْلَامَ وَالْمُسْلِمِينَ، وَأَذِلَّ الشِّرْكَ وَالْمُشْرِكِينَ، اللَّهُمَّ احْفَظِ الْكُوَيْتَ وَأَهْلَهَا مِنْ كُلِّ شَرٍّ وَمَكْرُوهٍ، وَاجْعَلْ هَذَا الْبَلَدَ آمِنًا مُطْمَئِنًّا وَسَائِرَ بِلَادِ الْمُسْلِمِينَ، اللَّهُمَّ احْفَظْ إِخْوَتَنَا الْمُرَابِطِينَ وَجَمِيعَ الْقَائِمِينَ عَلَى أَمْنِ الْبِلَادِ، وَثَبِّتِ الْأَرْضَ تَحْتَ أَقْدَامِهِمْ، اللَّهُمَّ وَفِّقْ أَمِيرَنَا وَوَلِيَّ عَهْدِهِ لِمَا تُحِبُّ وَتَرْضَى، وَخُذْ بِنَوَاصِيهِمَا لِلْبِرِّ وَالتَّقْوَى، وَآخِرُ دَعْوَانَا أَنِ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

ऐ अल्लाह! ईमान की मुहब्बत हमारे दिलों में डाल दे और इसे हमारे दिलों में सजा दे। कुफ़्र, नाफ़रमानी और गुनाहों से हमें नफ़रत अता फ़रमा, और हमें हिदायत पाने वालों में शामिल फ़रमा। ऐ अल्लाह! इस्लाम और मुसलमानों को इज़्ज़त और सरबुलंदी दे, और शिर्क व मुशरिकों को ज़लील और रुसवा कर दे। ऐ अल्लाह! कुवैत और यहाँ रहने वालों को हर आफ़त और बुराई से महफ़ूज़ रख, और इस मुल्क समेत तमाम इस्लामी मुल्कों को अम्न और सुकून का गहवारा बना दे। ऐ अल्लाह! सरहदों पर पहरा देने वाले हमारे जवानों और मुल्की सलामती पर तैनात सारे कर्मचारियों की हिफ़ाज़त फ़रमा, और उन्हें साबित क़दम रख। ऐ अल्लाह! हमारे अमीर और उनके वली-ए-अहद को उन कामों की तौफ़ीक़ दे जो तुझे पसंद हैं और जिनसे तू राज़ी होता है, और नेकी और परहेज़गारी के रास्ते पर उनकी मुकम्मल रहनुमाई फ़रमा।

और हमारी आख़िरी बात यही है कि सब तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं, जो सारी दुनियाओं का पालने वाला है।

जुमे का खुतबा तैयार करने वाली कमेटी